धार्मिकता की शिकार

रामेश्वर महादेव वाढेकर

सुबह-सुबह मैं घूमने निकली। हर दिन निकलती हूं, शरीर और मन अच्छा रहे इसलिए। आज का मौसम प्रसन्न था बहुत। वेसे देखा जाए तो यहां का माहौल हर समय प्रसन्न ही रहता है, क्योंकि यह मणिपुर है प्राकृतिक सौंदर्य का महासागर। जीवित प्रकृति का स्वर्ग। प्राकृतिक सौंदर्य जैसी सुंदर स्त्री है यहां की, चेहरे और मन से। साथ ही प्राचीन सांस्कृतिक वारस भी है यहां के प्रदेश को। मैं सोच में डूबी अवस्था में चल रही थी। उतने में सामने दिखाई दी 'एके जानकी लीमा'। जो 'मीरा पैबी संगठन' की प्रमुख नेता है वर्तमान की। वह मूल रूप से स्त्री शोषण करने वाले के खिलाफ़ संघर्ष करती रही है। मैंने उनसे कहा," मणिपुर का समृद्ध एवं प्राचीन इतिहास है,इसे कोई भूल नहीं सकता।"

" हां,मैंने पढ़ा है थोड़ा। और विस्तार से बता सकती है आप? एके जानकी लीमा ने जिज्ञासा भाव से पूछा।"

"जानने की जिज्ञासा है आपकी। मन ही मन मुस्कुराते हुए इरोम चानू शर्मिला ने कहा।"

-" जी,हां।"

-" बोधचंद्र नाम सुना है आपने।"

-"नहीं।"

-" वे मणिपुर रियासत के महत्वपूर्ण राजा के रूप में ख्यात रहे हैं। उनके कार्य की पहचान थी मणिपुर रियासत। स्वतंत्रता पूर्व अनेक राजा अंग्रेज सरकार के खिलाफ़ लड़ते रहे,जिनमें बोधचंद्र महाराज एक थे। कालांतर से भारत स्वतंत्र हुआ,परन्तु मणिपुर स्वतंत्र रियासत के रूप में अलग रहा। रियासत होने के बावजूद भी अस्तित्व में लोकतंत्र था वहा।"

-"मणिपुर भारत में विलीन कब हुआ?"

-" विलीन नहीं हुआ ,जबरन करवाया गया सितंबर,1949 में। साथ ही मणिपुर को राज्य का दर्जा नहीं दिया तत्कालीन समय। परिणाम स्वरूप मणिपुर में पीपल्स लिबरेशन आर्मी, पीपल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कांगलीपाक, कम्युनिस्ट पार्टी आदि उग्रवादी संगठन निर्माण हुए।"

-"उग्रवादी मतलब?"

-" न्याय,हक्क के लिए सरकार प्रति विद्रोह करने वाले।"

-" वे विद्रोह क्यों करते हैं?"

-"इसके अनेक कारण हैं,जिनमें प्रमुख है सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून। इसके माध्यम से अनेक निष्पाप व्यक्तियों का शोषण होता हैं।अधिकार का हनन भी! इसी कारणवश मैंने 5 नवंबर,2000 को यह

 ISSN:2583-8849

कानून मणिपुर राज्य से हटाने हेतु भूख हड़ताल की थी। यह विश्व जानता है। यह संघर्ष भारतवासियों ने देखा है आंखों से"

-"इतना संघर्ष होने के बाद भी बदलाव क्यों नहीं हुआ?"

-"गंदी राजनीति के कारण। लेकिन उन कानून का गलत इस्तमाल करके सरकार चाहे वह किसी भी पक्ष की हो, आम लोगों को त्रस्त करती है। यह भारतवासियों को ही नहीं,बल्कि विश्व को पता चला है।"

-" मुझे याद है 1958 का वर्ष। मणिपुर के कुछ हिस्सों में सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून लागू किया था। बहुत से निष्पाप लोगों को शिक्षा हुई थी,शक के कारण। इतना ही नहीं,1980 का दशक अशांत क्षेत्र घोषित किया था केंद्र सरकार ने मणिपुर में। साथ ही 'ऑपरेशन ऑल क्लियर' नाम से मोहिम शुरू की थी उग्रवादी संगठन खत्म करने हेतु।"

-"किसी को खत्म करना यह समस्या पर उपाय नहीं। उनके विचार में परिवर्तन लाना जरूरी है।"

-"2008 में उग्रवादी संगठन के साथ त्रिपक्षीय समझौता हुआ था ना।"

-"सिर्फ़ नाम के लिए।"

-" मैं नहीं समझी।"

-" समझौता में जिन मुद्दों पर चर्चा हुई,उसपर अमल नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप कालांतर से संघर्ष बढ़ता गया। वर्तमान में भीषण रूप झलक रहा है।किसी भी पार्टी की सरकार विशिष्ट समुदाय को अधिकार से वंचित रखेगी,तो उग्रवादी संगठन निर्माण होते रहेंगे "

हां,बिल्कुल सही। आपसे वार्तालाप करने से बहुत सी जानकारी मिली।अब मैं चलती हूं इरोम चानू शर्मिला। मिलते रहेंगे बीच-बीच में, इसी तरह।

-"हां,जरूर।"

कुछ वर्ष पुरानी बात है। मैं अकेली थी रास्ते पर। सड़क पर संन्नाटा था।सभी तरफ अंधार भी। मैं अकेली जा रही थी रास्ते से। घर पहुंची, तो ख़बर मिली कि दो स्त्री को निर्वस्त्र करके रास्ते से घुमाया। उसके साथ दुष्कर्म किए।यह प्रसंग सुनकर मैं बैचेन हुई। जैसे कि जीवित होकर भी मैं मर गई। इतने में जोर से आवाज सुनाई दी कि हमारे गांव 'मीरा पैबी संगठन' की कुछ महिलाएं प्रबोधन करने हेतु आई हैं। यह सुनकर मैं घर से बाहर निकली। तो मुझे दिखाई पड़ी 'एके जानकी लीमा'। देखते ही मैंने ख़ुश होकर कहा, "आप यहां। मुझे कुछ भी बताया नहीं।"

"आप इस गांव में रहती है,मुझे सच में पता नहीं था। आपसे बहुत वर्ष हुए मुलाकात नहीं हुई।आपसे संपर्क करने की बहुत कोशिश की इसके पहले अनेक बार। किन्तु संपर्क नहीं हो पाया। उत्साह रूप में एके जानकी लीमा कहने लगी।"

"आईए घर में,चाय लेते है। इरोम चानू शर्मिला ने कहा।"

ISSN:2583-8849

चाय लेते समय वार्तालाप शुरू हुआ दोनों में। सामाजिक कार्य पर बहुत चर्चा हुई। किन्तु इरोम चानू शर्मिला के चेहरे पर गंभीर भाव दिखाई दे रहे थे। वह चिंता में दिख रही थी। इतने में अचानक एके जानकी लीमा ने पूछा,"आप ठीक तो है ना। कुछ दिक्कत तो नहीं।"

-"अच्छी हूं शरीर से।मन से कब की टूट गई हूं।"

-"क्या हुआ? मुझे बताईए जल्द।"

-" दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके भीड़ ने घुमाया। उनके साथ दुष्कर्म भी किए दरिंदों ने। सिर्फ़ यह दो महिलाएं निर्वस्त्र नहीं हुई, ऐसी अनेक महिलाएं निर्वस्त्र हुई हैं। कहीं स्त्री ने अत्याचार सहे हैं। लेकिन वह सब चित्र अभी तक सामने नहीं आया।वास्तव में वर्तमान की न्यायपालिका, संसद,पत्रकारिता ही निर्वस्त्र हुई है। वह कुछ भी कर नहीं पा रही।"

-" यह घटना कहां हुई? और कब?"

-" मणिपुर के थोबल जिला में 4 मई,2023 को घटना घटित हुई।वातावरण हिंसाग्रस्त होने के कारण 150 लोग मारे गए। 400 लोग गंभीर रूप से घायल अवस्था में हैं। 60000 से अधिक लोग बेघर हुए। यह मीडिया ने बताया,असल में क्या परिस्थिति है वह मणिपुर के लोगों को पता हैं। पीड़ित महिलाओं में से एक के पति इंडियन आर्मी में थे। यह खबर सुनकर वे हैरान हुए। उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा कि मैंने कारगिल युद्ध में देश के लिए लड़ाई लड़ी। और भारतीय शांति सेना के हिस्से के रूप में श्रीलंका में था। मैंने देश की रक्षा की, लेकिन मुझे दुख है कि मैं अपनी पत्नी और ग्रामीणों की रक्षा नहीं कर सका।"

-"यह घटना घटित होने के पीछे क्या कारण थे? पता चले।"

-"घटना घटित होने के पीछे अनेक कारण हैं। परन्तु मूल कारण है मैतेई समाज को पहाड़ी क्षेत्र में जमीन खरीद ने का अधिकार न होना।साथ ही गौण कारण है नीच धार्मिक विचार और गंदी राजनीति। कोई भी समस्या निर्माण होती है तो शिकार महिला ही बनती है।यहां भी वही हुआ।"

-"मैं नहीं समझी।"

-" आपको जल्द समझ में भी नहीं आएगा। इसीलिए आपको मणिपुर के शैक्षिक,सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों का अध्ययन करना होगा।"

-"हां,वह तो है। मैं करुंगी अध्ययन।"

-" वैसे देखा जाए तो मणिपुर की आबादी लगभग पैंतीस लाख मानी जाती हैं। जिनमें मैतेई,नागा,कुकी आदि प्रमुख समुदाय है। मैतेई ज़्यादा मात्रा में हिंदू है।नागा,कुकी इसाई। नागा,कुकी समुदाय मणिपुर में अनुसूचित जनजाति में शामिल हैं। मणिपुर भूमि सुधार के तहद मैतेई समाज को पहाड़ी इलाकों में जमीन खरीद ने का अधिकार नहीं है। इसीलिए मैतेई समुदाय भूमि सुधार कानून का विरोध करते आया है निरंतर।"

- " भूमि सुधार कानून हटाना आसान नहीं है।"

-"अप्रत्यक्ष रूप से हटाने की कोशिश की है मैतेई समाज के राजनीतिक नेताओं ने।"

-"कैसे? मैं नहीं समझी।"

-"मणिपुर की राजनीतिक पृष्ठभूमि का इतिहास देखने से समझ आता है मैतेई समाज का वर्चस्व। मणिपुर के तक्करीबन मुख्यमंत्री मैतेई समाज से ही हुए है अभी तक। वर्तमान में भी मैतेई समाज के मुख्यमंत्री है। वे उच्च न्यायालय के मत पर खड़े उतरने वाले थे।"

"उच्च न्यायालय का क्या था? "

" मैतेई समाज के एक व्यक्ति ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी कि हम मूल मणिपुर के रहने वाले हैं। हम अनुसूचित जनजाति में शामिल थे प्राचीन समय। वर्तमान में नहीं है। कहीं वर्ष उन विषय पर विचार विनिमय हुआ। हाली में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने कहा कि मैतेई समाज को अनुसूचित जनजाति में विलीन करने पर सरकार विचार जल्द करें।"

-"न्यायाधीश ऐसा कैसे कह सकते है। यह तो आदिवासी समाज पर अन्याय होगा।"

-"न्यायाधीश सिर्फ़ नामधारी है। कठपुतली के रूप में वे बैठे है पद पर। निर्णय सत्ता धारी सरकार ही देती हैं। मैतई समुदाय का सामावेश अनुसूचित जनजाति में न हो,इसलिए मणिपुर के 'आल ट्राइबल स्टूडेंट युनियन' ने 3 मई,2023 को पर्वतीय क्षेत्रों में रैली का आयोजन किया। सरकार पर दबाव डालने हेतु। रैली का समापन होने से पहले इम्फाल घाटी से सटे हुए चूड़ाचांदपुर जिला में मैतेई और कुकी समुदाय में झड़प हुई। दोनों समुदाय ने एक-दूसरे के मंदिर,चर्च जलाए। सत्ताधारी सरकार ने मैतेई समुदाय में धर्म के नाम पर विष फैलाने का कार्य किया। इसी का परिणाम 4 मई,2023 को दो महिलाओं को निर्वस्त्र करके घुमाया गया, यह पीड़ादायक घटना घटी। जो देश के लिए कलंक थी।"

-" जब यह घटना घटित हुई,तब वहां का पुलिस प्रशासन क्या कर रहा था। सिर्फ़ तमाशा देख रहा था क्या?"

-" कुछ लोग कह रहे हैं कि पुलिस ने ही भीड़ के पास महिलाओं को दिया।"

-"ऐसा क्यों किया उन्होंने।"

-"डर के कारण या राजनीतिक दबाव के कारण। पीड़ित स्री की जान बचाने हेतु पिता और भाई ने खुद की जान गंवाई,किन्तु सफलता नहीं मिली उन्हें। स्री बहुत चिल्लाई,किन्तु उसकी वेदना किसे ने नहीं समझी। जानवरों जैसा शरीर नोचा हैवानों ने। आज वह जी तो रही है परन्तु मर-मर के। वह सिर्फ़ शरीर से जिंदा है,मन तो कबका मर गया। इतना ही नहीं यह घटित घटना सभी भारतवासियों को सतहत्तर दिन के पश्चात व्हिडिओ के माध्यम से पता चली।"

-"इतने दिन क्यों लगे?"

-" शायद मणिपुर सरकार साझा नहीं करना चाहती थी।किन्तु आप यह मत समझो कि मैं विपक्ष की बाजू ले रही हूं। या उसने मेरा राजनीतिक कोई संबंध है। मैंने जो आंखों से देखा, उसके आधार पर बात कर रही हूं।"

-"दोषी व्यक्तियों पर कार्रवाई हुई क्या?"

 ISSN:2583-8849

-" दोषी व्यक्तियों के नाम का अभी तक पता नहीं। कार्रवाई तो बहुत दूर।"

-" व्हिडिओ में मूल दोषी दिखते होंगे ना।"

-"दिखते हैं, किन्तु दोषी आदमी मैतेई समाज से है ना । सरकार भी तो उनकी है। अभी तक छह आदमी को मूल दोषी ठहराया। जिनमें से हुहिरेम हेरोदास मैतेई नाम सिर्फ़ सामने आया। कार्रवाई कुछ नहीं हुई।वह खुलेआम घूम रहा है समाज में।"

-"यानी सरकार भेदभाव कर रही है कुकी समुदाय के साथ। यह मामला केंद्र सरकार को सोपना चाहिए।"

-" तब भी कुछ नहीं होनेवाला। क्योंकि वहां उनके विचार की सरकार है। उनकी जगह विपक्ष की सरकार होती तो भी वह वहीं करते जो सत्ताधारी कर रहे हैं। सत्ता के लिए कुछ भी करती हैं भारत की सभी राजनीतिक पार्टियां। उन्हें जनता के प्रगति से कुछ मतलब नहीं है। सोप दिया है मामला, देखते हैं क्या होता है।"

-"मणिपुर में इतनी दर्दनाक घटना घटित हुई,यह भारत के इतिहास में पहली बार हुआ। यानी मणिपुर सरकार नाकाम हुई शांतता रखने में। मणिपुर के मुख्यमंत्री ने इस्तीफा देना चाहिए।"

-"इतना सब कुछ होने के बावजूद उन्हें कुछ नहीं लग रहा।वे मीडिया पर कह रहे है कि ज़्यादा कुछ नहीं हुआ,सिर्फ दो समाज में मतभेद है,बाकी कुछ नहीं।"

-" और क्या होना अपेक्षित है उन्हें। सब मणिपुर तो जल रहा है हिंसा के आग में। मूल रूप में वह जल नहीं रहा,जानबूझकर जलाया जा रहा है। विपक्ष क्यों कुछ बोल नहीं रहा।"

-" विपक्ष कहां अस्तित्व में रहां है वर्तमान में। विपक्ष के सदस्य सच बोलने की कोशिश करते हैं तो उनपर इडी जैसे हत्यार का प्रयोग किया जाता है जानबूझकर। साथ ही निलंबन।यह दो हत्यार प्रसिद्ध है किसी भी सत्ताधारी पार्टी के।"

-" लोकसभा में हिंसा पर बहुत बहस हुई। हिंसा के पीछे कौन है? इसपर दोनों यानी सत्ता धारी और विपक्ष में आरोप-प्रत्यारोप हुए।"

-"परन्तु केंद्र सरकार ने विपक्ष का आवाज दबाने की कोशिश की। आखिरकार दबाया ही। क्योंकि मणिपुर की सरकार उनके पार्टी है। साथ ही उनके पास बहुमत हैं। कुछ सांसद को निलंबित भी किया। सच में हिंसा भड़काने में दोषी कौन है,यह भारतवासियों को समझ आया।"

-" स्री हिंसा पर अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हुई। दोषियों का निषेध किया गया। लेकिन भारत में दोषियों की बाजू लेने की कोशिश अप्रत्यक्ष रूप से की गई सत्ता धारी सरकार की ओर से। यह निंदनीय है भारत के लिए।"

-" सत्ता धारी सरकार ऐसा क्यों कर रही है?"

-"क्योंकि लोकसभा चुनाव है सामने। कुछ कार्रवाई की तो सांसद, विधायक कम चूनकर आने की संभावना है।"

"गलत है यह सरासर।"

 ISSN:2583-8849

-"सत्ता पाने हेतु राजनेता कुछ भी करते हैं। परन्तु उन पीड़ित महिला के मन के बारे में किसी ने नहीं सोचा। यह घातक है भारत के भविष्य के लिए।"

"गुन्हेगार के विरुद्ध केस दायर की पीड़ित महिलाओं ने। एके जानकी लीमा ने चिंता के रूप में पूछा।"

"इतना कुछ होने के बावजूद भी गुन्हेगार के विरुद्ध केस दायर करने हेतु डर रही है पीड़ित महिलाएं। इरोम चानू शर्मिला ने गंभीर स्वर में कहा।"

-" आखिर क्यों?"

-"परिवार सुरक्षित रहे,इसलिए।"

-"लेकिन कुछ दिनों के पश्चात पीड़ित महिलाओं में से एक स्त्री ने शिकायत दर्ज की।सब कुछ साझा किया।"

-"न्याय मिला उसे।"

-" नहीं।वह जीकर भी मरी हुई है। सिर्फ़ परिवार खातिर जिंदा है,बस्स! लेकिन उसने हार नहीं मानी। न्याय के लिए लड़ रही है वह व्यवस्था के विरुद्ध।"

-"लड़ना ही होगा। उसने हार मानी तो हिंसाचार बढ़ता ही जाएगा स्त्री पर।"

-"उसने मन में तय किया है कि मैं गुन्हेगार को फांसी की सजा दिलाकर रहूंगी।"

-"हां,सही में मिलनी भी चाहिएं। ऐसा नहीं हुआ तो उसका न्याय व्यवस्था से विश्वास उठ जाएगा।"

-"वह न्याय मांगने हेतु दिन-रात भटक रही है। इतने माह हुए लेकिन कुछ नहीं हुआ। न्याय व्यवस्था से विश्वास उठा है उसका।"

इरोम चानू शर्मिला,उनको न्याय दिलाने हेतु कार्य करते रहेंगे हम निरंतर। उसके साथ खड़े रहेंगे डटकर।जब तक उन्हें न्याय नहीं मिलता, संघर्ष करते रहेंगे। जिस दिन उन दरिंदों को फांसी की सजा मिलेगी,तभी हम समझ लेंगे भारत में लोकतंत्र है। नहीं तो हम समस्त महिला समझ लेगी,यहां सिर्फ़ हुकूमशाही है...! सिर्फ़ हुकूमशाही...!

बहुत समय हुआ,अब में चलती हूं। गांव के महिलाओं से चर्चा करनी हैं समस्या के संदर्भ में। खुद का ख्याल रखना इरोम चानू शर्मिला, क्योंकि वर्तमान समय बहुत खराब है स्त्री के लिए...

ग्राम-सादोळा,तहसील-माजलगांव, जिला-बीड, महाराष्ट्र

 ISSN:2583-8849